विश्व न्याय मन्दिर

रिजवान-2010

विश्व के बहाइयों को

परम प्रिय मित्रगण,

1 बहाउल्लाह के अनुयायियों के प्रति सराहना भरे हृदय से यह घोषणा करते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है कि इस वर्ष रिजवान की शुरूआत के साथ ही दुनिया के प्रत्येक महाद्वीप में चलाए जा रहे सघन विकास कार्यक्रम की ताजा उपलब्धि सामने आई है और इनकी कुल संख्या पाँच वर्षीय योजना के समाप्त होने के एक वर्ष पहले ही निर्धारित लक्ष्य 1500 को पार कर चुकी है। विजय की प्रतीक इस अद्भुत उपलब्धि के लिए हम प्रभु के समक्ष कृतज्ञता से नतमस्तक हैं। इस दिशा में प्रयास करने वाले सभी, उस कृपा से अभिभूत हैं जो कृपा बहाउल्लाह ने पूरी दुनिया में रखी गई नींव के विस्तार और सुदृढ़ीकरण के लिए पूरा एक वर्ष देकर अपने समुदाय पर की है। यह एक वर्ष उन दायित्वों को निभाने के लिए तैयारी का भी समय देगा, जो अगले वैश्विक उद्यम में समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किए जाने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के सुस्पष्ट लक्ष्य के साथ अगली पाँच वर्षीय योजना जो इस श्रृंखला में पाँचवी है, में हमारे सामने होगी।

2 इस आनन्दमय अवसर पर ठहर कर यह स्पष्ट करते हुए हम भाव-विभोर अनुभव कर रहे हैं कि हमारे मन में गर्व और कृतज्ञता का भाव जगाने का कारण आपकी उपलब्धियों की सांख्यिकी यद्यपि विशिष्ट होते हुये भी उतनी नहीं है, जितना संस्कृति के अधिक गूढ़ स्तर पर हुये विकास के समुच्चयों पर, जिसको यह कार्य प्रमाणित करता है। इनमें से मुख्य हैं कि बहाई मित्रों में आध्यात्मिक विषयों पर लोगों से बातचीत करने की क्षमता बढ़ी है, बहाउल्लाह के व्यक्तित्व और उनके प्रकटीकरण के बारे में बताने की योग्यता का विकास हुआ है। उन्होंने अब अच्छी तरह समझ लिया है कि प्रभुधर्म का संदेश देना एक उदार जीवन की मूल आवश्यकता है।

3 हाल के संदेशों में हमने पूरे विश्व में शिक्षण प्रक्रिया की गति में सतत वृद्धि पर प्रसन्नता व्यक्त की है। प्रत्येक बहाई द्वारा इस मूलभूत आध्यात्मिक दायित्व को पूरा करना हमेशा से बहाई जीवन का एक अभिन्न हिस्सा रहा है और रहेगा। 1500 सघन विकास कार्यक्रमों की स्थापना ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अपने घर-परिवार और मित्रों के सीमित दायरे से बाहर निकलकर बहाई मित्रों का जीवन कितना साहसी और संकल्पित हो गया है और वे

चाहे जहाँ भी निवास कर रहे हों उस सर्वदयालु परमेश्वर के मार्गदर्शन में ग्रहणशील आत्माओं तक पहुँचने को तत्पर हैं। एक साधारणतम अनुमान के अनुसार लाखों लोग साझी समझ के आधार पर, उनके साथ मैत्री संबंध स्थापित करने वाले विभिन्न अभियानों में भाग लेते हैं जो पहले कभी अजनबी माने जाते थे।

4 अनुयायियों को प्रभुधर्म के मूलभूत सिद्धांतों को बिल्कुल आसान और स्पष्ट ढंग से प्रस्तुत करने के अपने प्रयासों में रूही संस्थान की पुस्तक 6 के स्पष्ट उदाहरणों से बहुत लाभ मिला है। जहाँ इस प्रस्तुतीकरण में निहित तर्क को सराहा जाता है तथा इसे एक फार्मूले में बदलने की इच्छा से दूर रहा जाता है, यह दो आत्माओं के मध्य वार्तालाप को बढ़ावा देती है - वार्तालाप जो समझ की गहराई तथा संबंधों के स्वभाव के कारण विशिष्ट होता है। अगर यह बातचीत पहली भेंट के बाद भी चलती है और पक्का मैत्री सम्बन्ध स्थापित हो जाता है तो इस तरह प्रत्यक्ष शिक्षण प्रयास आध्यात्मिक रूपान्तरण की एक स्थाई प्रक्रिया के लिए प्रेरक शक्ति बन सकता है। ऐसे नए मित्रों के साथ पहला सम्पर्क उन्हें बहाई समुदाय में शामिल होने के आमंत्रण देने या इसकी गतिविधियों में शामिल होने का आमंत्रण देने में परिणित होता है या नहीं, बहुत चिंता का विषय नहीं है। अधिक महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक व्यक्ति समाज के उत्थान में योगदान के उद्देश्य से समुदाय में शामिल होने में आमंत्रित अनुभव करे, मानवता की सेवा के पथ पर प्रयाण प्रारंभ करे तथा जिस पर प्रारंभ में या कुछ दूर चलने पर औपचारिक नामांकन हो सकता है।

5 इस प्रगति के महत्व को कम करके नहीं आंका जाना चाहिए। प्रत्येक समुदायसमूह में जब कार्य की एक निश्चित पद्धति स्थापित हो जाती है तो सहयोगियों के नेटवर्क की मदद से इसे और व्यापकता से बढ़ाने पर ध्यान देने की आवश्यकता है, जबकि ठीक उस समय आबादी के छोटे-छोटे टुकड़ों पर ऊर्जा केन्द्रित की जानी चाहिए और उनमें से प्रत्येक को गहन गतिविधियों का केन्द्र बनना चाहिए। एक शहरी समुदायसमूह में ऐसी गतिविधियों का केन्द्र पड़ोस की सीमाओं से सर्वोत्तम परिभाषित हो सकता है; जबकि ग्रामीण समुदायसमूह में इस उद्देश्य के लिए कोई गाँव उचित सामाजिक स्थल हो सकता है। इन गतिविधि केंद्रों में सेवा दे रहे, स्थानीय निवासी और भ्रमणशील शिक्षक दोनों को ही अपने काम को, समुदाय के नवनिर्माण के पावन दायित्व के रूप में लेना चाहिए। उनके शिक्षण प्रयासों पर 'घर-घर जाकर' जैसे ठप्पे लगा देना उस पावन प्रक्रिया के साथ न्याय नहीं है, यद्यपि उनका पहला संबंध बिना किसी पूर्व सूचना के किसी परिवार के सदस्यों से मिलने का ही क्यों न हो, जो लोगों की क्षमता और योग्यता बढ़ाकर उनके आध्यात्मिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास का दायित्व स्वयं उन्हें ही सौपना चाहती हो। वे गतिविधियाँ जो इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाती है और जिनमें नए मित्रों को शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाता है - बैठकें, जो

समुदाय के भक्तिमय चरित्र को सुदृढ़ करती हैं, कक्षाएँ, जो बच्चों के कोमल हृदय और मन को पोषित करती है, समूह, जो किशोरों की उफनती ऊर्जा को एक रचनात्मक दिशा प्रदान करते हैं, स्टडी सर्किल, जो सबके लिए खुले हैं और जो विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों को एक समान धरातल पर आगे बढ़ने और अपने निजी तथा सामूहिक जीवन में प्रभुधर्म के संदेशों का उपयोग सुनिश्चित कर पाने में सक्षम बनाते हैं - को चलाये रखने के लिये कुछ समय तक बाहय सहायता की आवश्यकता पड़ सकती है। यह आशा की जानी चाहिए कि बहुत जल्द ही इन मूल गतिविधियों में गुणनात्मक वृद्धि पास पड़ोस में उपलब्ध संसाधनों द्वारा बनाई रखी जायेगी, इन्हें उन उत्साही स्त्रियों व पुरूषों का समर्थन मिलेगा जो अपने चारों ओर भौतिक और आध्यात्मिक स्थितियों में सुधार लाना चाहते हैं। इसके बाद धीरे-धीरे सामुदायिक जीवन की एक ऐसी लय उदित होगी जो बहाउल्लाह की नई व्यवस्था के लक्ष्य को समर्पित लोगों के विकसित होते केन्द्र की क्षमता के अनुरूप होगी।

6 इस संदर्भ में मूल गतिविधियों द्वारा गति में लाई गई समुदाय के नवनिर्माण की प्रक्रिया में भागीदारी की इच्छा, स्वयं ग्रहणशीलता को प्रकट करती है। सभी समुदायसमूहों में जहाँ सघन विकास कार्यक्रम चल रहा है वहाँ इस आने वाले वर्ष में बहाई मित्रों का दायित्व होगा एक या अनेक ग्रहणशील जनसमुदायों के बीच प्रभुधर्म का संदेश देना, अपने धर्म के मूलभूत सिद्धांतों की व्याख्या में प्रत्यक्ष विधा का उपयोग कर उन लोगों की पहचान करना जो समाज द्वारा आरोपित जड़ता को उतार फेंकना चाहते हैं और सामूहिक रूपांतरण की प्रक्रिया में, अपने पड़ोस या गाँवों में सहयोग देना चाहते हैं। यदि बहाई मित्र समुदाय के नवनिर्माण के उपाय सीखने के अपने प्रयासों में लगे रहें तो इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रभुधर्म के कार्यों में सामूहिक भागीदारी का लक्ष्य दिन दूनी रात चौगुनी तीव्रता से बढ़ता हुआ हमारी मुट्ठी में होगा।

7 इस चुनौती से निपटते हुए इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्रभुधर्म के अनुयायियों और उनकी सेवा कर रही संस्थाओं को समुदायसमूहों में संस्थान प्रक्रिया सुदृढ़ करनी होगी, इसके लिए स्टडी सर्किल के शिक्षकों की क्षमता रखने वाले मित्रों की संख्या खासी बढ़ानी होगी, यह समझना होगा कि पड़ोस तथा गाँवों में इस उद्देश्य की उत्कट इच्छा से विशिष्ट एक सक्रिय सामुदायिक जीवन को बढ़ावा देने के अवसर जो आज बहाई मित्रों के सामने खुले हैं, वे पिछले एक दशक के दौरान बहाई संस्कृति के उस पक्ष में हुए महत्वपूर्ण विकास से ही सम्भव हो सके हैं, जो दृढ़ीकरण से सम्बन्धित हैं।

8 जब दिसम्बर 1995 में हमने विश्वव्यापी स्तर पर प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना का आहवान किया था उस समय बहाई समुदाय में प्रभुधर्म के बारे में एक अनुयायी के ज्ञान के दृढ़ीकरण के लिए मुख्यतः कभी-कभार पाठ्यक्रमों और कक्षाओं का आयोजन जो विभिन्न अवधि की

होती थी तथा अनेक विषयों को छूती थीं, की व्यवस्था प्रचलित थी। उस समय इस व्यवस्था ने विश्व स्तर पर उभरते कम संख्या वाले तथा पूर्ण विश्व में भौगोलिक वृद्धि से मुख्यता सम्बन्धित बहाई समुदाय की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा भी किया था। हालांकि उस समय हमने यह भी स्पष्ट किया था कि यदि हमें समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किए जाने की प्रक्रिया को तेजी से बढ़ाना है। पावन लेखों के अध्ययन के लिए हमें दूसरा माध्यम अपनाना होगा, एक ऐसा माध्यम जो कार्यक्षेत्र में अधिक से अधिक लोगों को ला सके। इस सन्दर्भ में हमने कहा था कि प्रशिक्षण संस्थान अपने पाठ्यक्रमों के माध्यम से बहाइयों की लगातार बढ़ती हुई संख्या को प्रभुधर्म के सेवाकार्यों में सहयोग दें। ये पाठ्यक्रम ऐसे हों जो पहले से तेज हो रहे विस्तार और सुगठन कार्यों से जुड़े दायित्व को पूरा करने के लिए आवश्यक ज्ञान, अन्तर्दृष्टि और कौशल प्रदान करें।

9 प्रभुधर्म के पावन लेखों को पढ़ना और बहाउल्लाह के विशाल प्रकटीकरण के महत्व के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना - ये दायित्व बहाउल्लाह के प्रत्येक अनुयायी को सौंपे गए हैं। सभी के लिए आदेशित है कि वह इस महान प्रकटीकरण के समुद्र से अपनी रूचि और सामर्थ्य के अनुसार ज्ञान के मोतियां की खोज करें। इस आलोक में स्थानीय दृढ़ीकरण कक्षाएँ, शरदकालीन और ग्रीष्मकालीन विद्यालय, और विशेष रूप से आयोजित बैठकें-जिनमें पावन लेखों में विशेष पैठ रखने वाले लोग, एक दूसरे के साथ विचारों का आदान-प्रदान कर सकें, बहाई जीवन की प्रमुख विशेषताओं के रूप में स्वाभाविक तौरपर उभर कर सामने आई हैं। जैसे दैनिक पाठ का अभ्यास बहाई जीवन का एक अभिन्न अंग बना रहेगा वैसे ही अध्ययन के ये रूप भी समुदाय के सामूहिक जीवन में स्थान बनाए रखेंगे। किन्तु प्रभु के प्रकटीकरण के निहितार्थों को व्यक्तिगत विकास और सामाजिक प्रगति दोनों सन्दर्भों में-समझने का महत्व तब कई गुना बढ़ जाता है जब अध्ययन और सेवाकार्यों को जोड़ा और साथ-साथ चलाया जाता है। वहाँ सेवा के क्षेत्र में अर्जित ज्ञान की परीक्षा होती है। अभ्यास से प्रश्न खड़े होते हैं और हम समझ के नए स्तर को प्राप्त करते हैं। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली, जो आज एक देश के बाद दूसरे देश में स्थापित हो रही है, के प्रधान तत्वों में हैं स्टडी सर्किल, शिक्षण और रूही संस्थान का पाठ्यक्रम - इनके द्वारा आज विश्व के बहाई समुदायों ने हजारों, हजारों नहीं बल्कि लाखों लोगों को छोटे-छोटे समूहों में पावन लेखों का अध्ययन करने में सक्षम बनाने की योग्यता प्राप्त कर ली है। स्पष्ट रूप से इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है - बहाई संदेशों को वास्तविकता में उतारना और बड़े पैमाने पर स्थायी विस्तार और सुगठन के सेवाकार्यों को इसके अगले चरण में ले चलना।

10 इस तरह जो अनन्त सम्भावनाएँ सृजित हो रही है उन्हें समझने से कोई चूके नहीं। आज समाज में व्याप्त शक्तियाँ निष्क्रियता को जन्म दे रही हैं। बढ़ती कुशलता के साथ पीढ़ियाँ

उनके नेतृत्व में जाने को तैयार हैं जो उनकी कृत्रिम भावनाओं को छूने में दक्ष सिद्ध होता है। स्वयं का स्वागत-सत्कार किए जाने की लालसा को बचपन से ही पोषित किया जाता है। यहाँ तक कि अनेक शिक्षा पद्धतियों में भी विद्यार्थी को एक ऐसा यंत्र माना जाता है जो केवल सूचना ग्रहण करने के उद्देश्य से बनाया गया है। सोच, अध्ययन और कार्य के ऐसे ढंग को बढ़ावा देती है जिसमें सभी अपने आपको एक समान सेवापथ पर साथ-साथ आगे बढ़ते, एक दूसरे की मदद करते और साथ आगे बढ़ते, हर एक के ज्ञान के प्रति आदर भाव रखते और अनुयायियों को किसी भी श्रेणी जैसे दृढ़ अथवा ज्ञानहीन में बाँटने की प्रवृत्ति से बचते हुए बहाई जगत ने ऐसी संस्कृति विकसित करने में सफलता प्राप्त की है। यह विशाल आयामी उपलब्धि है। और इसमें छिपी है अदमनीय आंदोलन की गतिमानता।

11 आवश्यकता है स्टडी सर्किल के स्तर पर विकसित शिक्षण प्रणाली की गुणवत्ता को अगले वर्ष के दौरान सुस्पष्टतया बढ़ाना ताकि स्थानीय आबादी की इस गतिमानता को प्राप्त करने की क्षमता का उपयोग हो सके। इस सन्दर्भ में सहशिक्षकों की जिम्मेदारी बहुत ही महत्वपूर्ण है। संस्थान प्रक्रिया के लिए जिस वातावरण की कल्पना की गई थी, जो माहौल लोगों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए प्रेरक बन सके - उनके समक्ष चुनौती होगी उस वातावरण को उपलब्ध कराने की जिसकी कल्पना संस्थान प्रक्रिया/पाठ्यक्रमों के लिए की गई है, ऐसा वातावरण जो लोगों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए उपयुक्त हो, जिसमें वे स्वयं को अपनी शिक्षा के क्रियात्मक माध्यम के रूप में एवं व्यक्तिगत और सामूहिक रूपांतरण के लिए आवश्यक एवं सतत प्रयासों के प्रेरक के रूप में देख सकें। इस आवश्यकता के अपूर्ण रहने पर समुदाय समूह में चाहे जितने भी स्टडी सर्किल आयोजित किए जाएं, परिवर्तन के लिए आवश्यक ऊर्जा सृजित नहीं हो पाएगी।

12 यदि शिक्षकों का दायित्व, ज्ञान और उत्कृष्टता के ऊँचे से ऊँचे स्तर को प्राप्त करना है तो यह भी ध्यान रखना होगा कि मानव संसाधनों के विकास का प्राथमिक दायित्व उस क्षेत्र अथवा देश के प्रशिक्षण संस्थानों का है। प्रतिभागियों की संख्या बढ़ाने के प्रयासों के साथ-साथ संस्थानों को, बोर्ड से लेकर संयोजकों और प्रशिक्षकों तक - पूरी प्रणाली की प्रभावशीलता बढ़ाने पर भी समान ध्यान देना होगा, क्योंकि अंतिम विश्लेषण में सतत संख्यात्मक उपलब्धियाँ गुणात्मक प्रगति पर निर्भर होंगी। समुदायसमूह के स्तर पर संयोजक को शिक्षकों को सहयोग देने के अपने प्रयासों में व्यावहारिक अनुभव और गत्यात्मकता, दोनों का संतुलन बनाना होगा। संयोजक को शिक्षकों के प्रयासों की समीक्षा करने के लिए समय-समय पर बैठकें आयोजित करनी चाहिए। संस्थान सामग्री के चुने हुए अंशों का दोबारा अध्ययन अर्थात उन्हें दोहराने का आयोजन भी अवसर के अनुरूप लाभदायक हो सकता है। एक शिक्षक की योग्यताएं सतत बढ़ती जाती हैं जब कोई व्यक्ति पाठ्यक्रमों का अध्ययन और उनके

व्यावहारिक पक्ष को प्रयोग में लाते हुए कार्य और सेवा के क्षेत्र में उतरता है और दूसरों को विश्व योजनाओं के वर्तमान लक्ष्यों में योगदान करने में सहयोग देता है। जैसे ही विभिन्न आयु वर्ग के स्त्री पुरूष शिक्षक की मदद से अपने पाठ्यक्रम पूरे करें वैसे ही उनकी रूचि एवं शक्तियों के अनुरूप सेवा क्षेत्र में उतरने के लिए अन्य लोगों को उनके साथ चलने के लिए अवश्य तैयार रहना होगा - विशेष रूप से बच्चों की कक्षा, किशोर दल और स्टडी सर्किल के संयोजकों को। अगले बारह महीनों में यह सुनिश्चित करना कि इस प्रक्रिया में पर्याप्त ऊर्जा एवं उत्साह का संचार हो रहा है, प्रत्येक देश में सघन शिक्षण का उद्देश्य बना रहेगा।

13 बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा के प्रति चिंता आरम्भ से ही बहाई संस्कृति का एक प्रमुख तत्व रहा है। यह चिंता दो सहअस्तित्व सच्चाइयों के रूप में सामने आई। पहली- ईरान के बहाइयों की एक उपलब्धि की नकल करना जो बहाई परिवारों के बच्चों की प्रणालीबद्ध कक्षायें चलाते थे, विशेष रूप से प्रभुधर्म के इतिहास और शिक्षाओं का ज्ञान नई पीढ़ी को देने के उद्देश्य से। विश्व के किसी भी दूसरे हिस्से में इस प्रकार की बहाई कक्षाओं से लाभान्वित होने वालों की संख्या बहुत कम है। दूसरी वास्तविकता उन शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों से उभर कर सामने आई जहाँ बड़े पैमाने पर लोगों ने प्रभुधर्म को स्वीकार किया। लेकिन जहाँ विभिन्न परिवारों के बच्चे एक साथ बहाई कक्षाओं में आने को उत्सुक थे, वहीं साल-दर-साल विभिन्न कारणों से पाठ्यक्रम के नियमित संचालन में बाधा आई। संस्थान द्वारा प्रशिक्षित मित्रों द्वारा क्रमबद्ध तरीके से सभी जगह सर्वसुलभ कक्षाएं चलाए जाने के प्रयासों के फलस्वरूप ऐतिहासिक परिस्थितियों के कारण उत्पन्न द्विविधता के समापन का प्रारंभ देख कर हम अत्यन्त प्रसन्न हैं।

14 ऐसी आशाजनक शुरूआतों पर अब प्रबल ध्यान दिया जाना होगा। प्रत्येक समुदाय-समूह में जहाँ सघन विकास कार्यक्रम चल रहा है, वहाँ विभिन्न पृष्ठभूमि के परिवारों की बढ़ती संख्या को बच्चों की आध्यात्मिक शिक्षा को प्रणालीबद्ध करने के प्रयास करने होंगे, जो कि आस-पड़ोस तथा गाँवों में तेजी पा रही समुदाय निर्माण प्रक्रिया की एक आवश्यकता है। यह एक अपेक्षा रखने वाला कार्य होगा जो संस्थाओं तथा माता-पिता दोनों से सहयोग और धैर्यता की मांग करेगा। रूही संस्थान से पहले ही निवेदन किया गया है कि बच्चों की कक्षा के शिक्षकों के प्रशिक्षण संबंधित अपने सभी स्तरों के पाठ्यक्रमों में जिसमें दूरस्थ शिक्षा भी शामिल है, के निर्माण में तेजी लाएं। यह 5-6 वर्ष के बच्चों से प्रारम्भ होकर 10-11 वर्ष तक के बच्चों तक पहुँचे, ताकि वर्तमान में उपलब्ध पाठों से लेकर किशोरों की पुस्तकों जैसे आस्था की चेतना तथा आने वाली पुस्तकें पवित्र चेतना की शक्ति के बीच के अंतर को समाप्त किया जा सके। यह पुस्तकें किशोरों के उस आयु समूह के कार्यक्रमों को विशिष्ट बहाई भाग उपलब्ध कराती है। जैसे ही यह अतिरिक्त पाठ्यक्रम तथा पाठ उपलब्ध होंगे, प्रत्येक देश के

संस्थान ऐसे शिक्षकों तथा संयोजकों को तैयार करने योग्य हो सकेंगे जिनकी आवश्यकता है क्रमबद्ध तरीके से बच्चों के आध्यात्मिक शिक्षण के उस कार्यक्रम के केन्द्रबिन्दु को स्थापित करने के लिये जिसके चारों ओर द्वितीयक तत्वों को आयोजित किया जा सकता है। तब तक संस्थान शिक्षकों को उपलब्ध उपयुक्त सामग्री उपलब्ध कराने का सर्वोत्तम प्रयास करते रहें, जिसका उपयोग वे विभिन्न आयु वर्ग की कक्षाओं में आवश्यकतानुसार करते रहें।

15 अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र ने पाँच वर्षीय योजना के लक्ष्य को समय से एक वर्ष पहले ही प्राप्त कर लेने के प्रयासों को जो महत्वपूर्ण प्रेरक आवेग उपलब्ध कराया उससे इसने हमारी कृतज्ञता अर्जित कर ली है। प्रत्येक महाद्वीप में होते विकास एवं महाद्वीपीय सलाहकारों के साथ करीबी सहयोग करके इस विश्व व्यापी अभियान में केन्द्र ने जिस श्रेणी तक ऊर्जा भर दी वह प्रशासनिक व्यवस्था की अंतर्निहित विस्मयकारी शक्तियों की एक झलक दर्शाता है। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र ने अब जब उसी ऊर्जा से अपना ध्यान, क्लस्टर स्तर पर आयोजित गतिविधियों की प्रभावशीलता से जुड़े सवालों पर दिया है, तो निःसंदेह ही वह बहाई बाल कक्षाओं के आयोजन के विषय को अब विशेष प्राथमिकता देगा। हमें पूरा विश्वास है कि आने वाले वर्ष में विविध सामाजिक यथार्थों का प्रतिनिधित्व करते कुछ चुने हुये समुदायसमूहों के अनुभवों के उसके विश्लेषण के आधार पर उन व्यावहारिक मुद्दों पर प्रकाश पड़ेगा, जिससे प्रत्येक आयुवर्ग के बच्चों के लिए आस पड़ोस एवं गाँवों में नियमित कक्षाओं की शुरूआत सम्भव हो सकेगी।

16 किशोरों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण के कार्यक्रम का तेजी से प्रसार बहाई समुदाय की सांस्कृतिक प्रगति का एक दूसरा उदाहरण है। जहाँ आज पूरी दुनिया में इस उम्र के बच्चों को आमतौर पर मुश्किलें और समस्या पैदा करने वाले उग्र भौतिक एवं भावनात्मक परिवर्तन की वेदना में खोया हुआ, गैर जिम्मेदार और आत्मकेन्द्रित मानने का प्रचलन है, वहीं बहाई समुदाय किशोरों के लिये उपयोग की जा रही भाषा तथा उठाये जाने वाले कदमों से निश्चय ही विरोधी दिशा में जा रहा है। बहाई समुदाय किशोरों में सच्चाई, निष्ठा, न्यायप्रियता ब्रह्माण्ड के विषय में बहुत कुछ सीखने की उत्सुकता और एक बेहतर दुनिया के निर्माण में सहयोग देने की उत्कट इच्छा पाता है। आज पूरे विश्व में जिस तरह किशोर सशक्तिकरण कार्यक्रमों में अपने विचारों को अभिव्यक्त करना शुरू किया है वह इस सोच को सही प्रमाणित करता है। यह स्पष्ट है कि यह कार्यक्रम उनकी बढ़ती चेतना को वास्तविकता की ऐसी खोज में संलग्न करता है जिससे वे समाज में कार्यशील सृजनात्मक एवं विध्वंसकारी शक्तियों का विश्लेषण कर अपने विचारों एवं कार्यों पर होते इनके प्रभाव की पहचान कर सकें; अपने आध्यात्मिक बोध को प्रखर कर, अभिव्यक्ति की क्षमता को बढ़ा कर ऐसे नैतिक मूल्यों को सशक्त करें जो उनके पूरे जीवन में साथ देंगे। इस उम्र में जब बौद्धिक, आध्यात्मिक,

शारीरिक क्षमताएँ प्रचुरता में उन्हें उपलब्ध होती हैं, उन्हें ऐसे संसाधनों से सुसज्जित किया जा रहा है जिनसे वे उन ताकतों का मुकाबला कर सकें जो एक सच्चे मानव के रूप में उनकी पहचान मिटाने और मानवता के हित के लिए काम करने से रोकने पर आमादा हैं।

17 कार्यक्रम के बड़े भाग बहाई दृष्टिकोण से विषयों पर आधारित होते हुये भी धार्मिक आदेश के रूप में नहीं हैं जिससे इन कार्यक्रमों का विभिन्न परिस्थितियों तथा अवस्थाओं में किशोरों तक विस्तार का रास्ता खुला है। कार्यक्रम लागू करने वालों के, अपने कार्यक्षेत्र में उतरने पर कई प्रश्न और सम्भावनाएँ उनके सामने आ खड़ी होती हैं जिन पर सीखने की विश्व स्तरीय प्रक्रिया के तहत, पवित्र भूमि के सामाजिक और आर्थिक विकास कार्यालय द्वारा व्यापक विचार एवं ध्यान किया जाता है। इस दिशा में दूसरों को तेजी से आगे बढ़ाने के लिए ज्ञान एवं अनुभव के इस संचित होते भण्डार ने पूरे विश्व में फैले अनेक क्लस्टरों में से प्रत्येक में एक हजार से अधिक किशोरों को संपोषित करने की क्षमता प्रदान की है। कार्यालय सभी महाद्वीपों में कुछ अनुयायियों की सहायता, वैसे स्थलों का एक नेटवर्क बना रहा है जिसका उपयोग सैकड़ों समुदायसमूहों के संयोजकों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये किया जा सकेगा। इन संयोजकों को अपने समुदायसमूहों में लौटने के बाद भी संसाधन सम्पन्न लोगों का आवश्यक सहयोग प्राप्त होता रहता है ताकि वे ऐसा आध्यात्मिक वातावरण बनाने में सक्षम हो सकें जिसमें किशोर कार्यक्रम अपनी जड़ें मजबूत कर सकें।

*

18 उद्यम की इस दिशा में, निश्चित रूप से अभी और भी ज्ञान अर्जित होगा हालाँकि कार्य की प्रणाली स्पष्ट हो चुकी है। मात्र बहाई समुदाय की क्षमता, स्कूलों और नागरिक संगठनों की ओर से ऐसे कार्यक्रम की हो रही मांगों की पूर्ति कर पाने को सीमित करती हैं। आज जिन समुदायसमूहों में सघन विकास कार्यक्रम चलाया जा रहा है वहाँ व्यापक भिन्न परिस्थितियाँ हैं जैसे कुछ किशोरदल वाले समूहों से लेकर पर्याप्त संख्या वाले स्थानों तक, जहाँ समर्पित संयोजकों की सेवाओं की जरूरत है जिन्हें एक क्षेत्र से सीख के विस्तार हेतु निरंतर सहायता प्राप्त हो सके। इन समुदायसमूहों के पूरे जाल में क्षमता निर्माण को सुनिश्चित करने के लिए हम पूर्णकालिक संयोजकों वाली 32 लर्निंग साइट का आह्वान कर रहे हैं, जिनमें से प्रत्येक 20 समुदायसमूहों को सेवा देंगे। ये साइट वर्तमान योजना के अंत तक काम करना शुरू कर देंगी। अन्य सभी समुदायसमूहों में अगले वर्ष प्रणालीबद्ध ढंग से समूहों की संख्या बढ़ाकर इन कार्यक्रमों को चलाने की क्षमता सृजित किए जाने को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

19 अब तक हमने जिन उपलब्धियों को बताया है - प्रभुधर्म का सीधे संदेश देने की क्षमता में वृद्धि, समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों के साथ आध्यात्मिक महत्व के विषयों पर सार्थक बातचीत, पावन लेखों के अध्ययन को व्यवहार में उतारना, आस-पड़ोस और गाँवों के किशोरों को नियमित रूप से आध्यात्मिक शिक्षण देने के संकल्प को दोहराना, ऐसे कार्यक्रम के प्रभाव को बढ़ाना जो किशोरों में दोहरे नैतिक उद्देश्य अपनी निहित क्षमता में वृद्धि और समाज के रूपांतरण में योगदान देने की भावना में वृद्धि करे - यह सभी संस्कृति के स्तर पर एक और विकास को बढ़ावा देगी, जिनका प्रभाव निश्चित रूप से दूरगामी है। सामूहिक चेतना में यह विकास परिलक्षित होने लगा है जब हम साथ-साथ चलना शब्द को मित्रों द्वारा अनेक बार बातचीत में प्रयोग करते हुये पाते है। वह शब्द जो बहाई समुदाय की भाषा में सम्मिलित होते हुये नये अर्थों से सुसज्जित हो रहा है। यह उस संस्कृति के महत्वपूर्ण सुदृढ़ीकरण का प्रतीक है जिसमें सीखना, कार्य करने की विधा है - वह विधा जो अधिक से अधिक लोगों को बहाउल्लाह की शिक्षाओं को दिव्य सभ्यता के निर्माण के लिए अपनाने के संगठित प्रयास के लिए प्रेरित करती है, जिसे धर्मसंरक्षक ने प्रभुधर्म का आरम्भिक मिशन बताया है। आध्यात्मिक रूप से इस प्रकार का प्रयास दीवालिया हो चुकी, जर्जर सामाजिक व्यवस्था के विपरीत है जो अनेक बार मानवीय ऊर्जा को लालच, आधिपत्य, जोड़तोड़ और अपराध जैसे कृत्यों से प्राप्त करने का प्रयास करती है।

20 मित्रों के बीच के संबंधों में संस्कृति में आया यह बदलाव उनके वार्तालाप की गुणवत्ता में नजर आता है। क्रियाकलापों में सीखने की स्थिति में रहने के लिए आवश्यक है कि सभी विनम्रता की अवस्था में रहें, वह दशा जिसमें व्यक्ति स्वयं को भूल जाता है, ईश्वर में पूर्ण भरोसा रखता है, ईश्वर की सर्वपोषणकारी शक्ति तथा उसकी अचूक सहायता में विश्वास, यह जानते हुये कि वह, मात्र वह ही, एक कीट को गरूड़ में, बूंद को समुद्र में बदल सकता है। इस दशा में, आत्मायें एक साथ अनवरत प्रयास करती हैं, अपने द्वारा किये कार्यों में उतना प्रसन्न न हो कर बल्कि दूसरों की प्रगति तथा सेवा में प्रसन्न होकर। ईश्वरीय धर्म के सेवा में ऊँचे उठने में, ईश्वर के ज्ञान-स्वर्ग में उड़ान भरने में एक दूसरे की लगातार मदद करने पर उनके विचार केन्द्रित रहते हैं। हम यही प्रक्रिया अनावरित होते देख पा रहे हैं पूरे विश्व में हो रही गतिविधियों में, जो युवा व वृद्ध, नये व पुराने बहाईयों द्वारा साथ-साथ कार्य कर, की जा रही हैं।

21 संस्कृति में हो रही यह प्रगति न सिर्फ मित्रों के बीच संबंधों को प्रभावित करती है, बल्कि इसके प्रभाव धर्म के प्रशासनिक क्रियाकलापों के प्रबंधन में भी महसूस किये जा सकते हैं। जैसे 'सीखना' समुदाय की क्रियाकलाप विधा को विशिष्ट करने लगी है, प्रसार तथा सुगठन संबंधी निर्णयों के कुछ भागों को अनुयायियों के समूह को दे दिया गया है जिससे योजना

निर्माण तथा उसे लागू करना जमीनी हकीकत के प्रति अधिक संवेदनशील हो गया है। स्पष्टतया, समीक्षा बैठक की एजेंसी के रूप में एक धरातल तैयार हो गया है, उन मित्रों के लिये जो क्लस्टर स्तर पर गतिविधियों में लिप्त हैं। वे समय-समय पर मिलकर, संस्थाओं से प्राप्त मार्गदर्शन तथा अनुभव के प्रकाश में, अपनी वर्तमान स्थिति में आम सहमति को प्राप्त कर अपने तुरंत उठाये जाने वाले कदमों को निश्चित करते हैं। इसी प्रकार का धरातल संस्थान द्‌वारा सहशिक्षक, बाल कक्षा के अध्यापक, तथा किशोर अनुप्रेरक के रूप में सेवा दे रहे मित्रों को उपलब्ध कराया जाता है, जो क्लस्टर में अनेक बार मिल कर अपने अनुभवों पर विचार करते हैं। स्थानीय स्तर पर हो रहे इस विचार विमर्श की प्रक्रिया में अभिन्न रूप से जुडी़ हैं प्रशिक्षण सस्थान की एजेंसियाँ, क्षेत्रीय शिक्षण समिति तथा सहायक मंडल सदस्य, जिनके संयुक्त वर्तालाप एक अन्य धरातल उपलब्ध कराते हैं जिसमें मिल-जुल कर विकास संबंधी निर्णय लिये जाते हैं, यह धरातल अधिक औपचारिक होता है। क्लस्टर-स्तर पर क्रियाकलाप प्रणाली, जो आवश्यकताओं के कारण जन्मी है, बहाई प्रशासन के एक महत्वपूर्ण लक्षण को इंगित करती है : जीवित अवयव की भांति इसने अपने भीतर विश्व न्याय मंदिर के मार्गदर्शन में, उभरते हुये ढांचे और प्रक्रिया, संबंधों तथा क्रियाकलापों से संबंधित वृहदतर जटिलता को अपनाने की क्षमता विकसित कर ली है।

22 स्थानीय से क्षेत्रीय, राष्ट्रीय से महाद्‌वीपीय स्तर तक धर्म की सभी स्तरों की संस्थायें इस बढ़ती जटिलता का अधिक दक्षता के साथ प्रबंधन कर पा रही हैं - उनकी सतत परिपक्वता के चिह्न तथा आवश्यकता, दोनों को दर्शाता है। प्रशासनिक ढांचों में विकसित हो रहे संबंधों ने स्थानीय आध्यात्मिक सभा को - ईश्वरीय शब्दों के प्रसार, अनुयायियों की ऊर्जाओं को संघटित करने तथा आध्यात्मिक रूप से उच्च वातावरण को तैयार करने आदि जिम्मेवारियों को पूरा करने के लिये एक नये स्तर की दहलीज पर खड़ा कर दिया है। पिछले अवसरों पर हमने स्पष्ट किया है कि स्थानीय सभा की परिपक्वता इसकी नियमित बैठकों तथा इसके क्रियाकलापों की कुशलता मात्र से नहीं मापी जा सकती। इसकी शक्ति अधिकतर मापी जानी चाहिए इसके द्‌वारा सेवा किये जा रहे समुदाय की आध्यात्मिक व सामाजिक जीवन की ओजस्विता से- एक विकास कर रहे समुदाय से जो नामांकित तथा गैरनामांकित दोनों के सृजनात्मक योगदानों का स्वागत करता है। यह देखना अत्यंत सुखद है कि वर्तमान प्रयास, विधियाँ तथा उपकरण स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं, उनको भी जो नयी चुनी गई हैं, को वे साधन उपलब्ध करा रहे हैं जो इन जिम्मेवारियों को पूर्ण कर सकते हैं, जो वे अपने समुदाय में पाँच वर्षीय योजना की आवश्यकताओं को भरपूर पूरा करने के लिये उठा रही हैं। निश्चित ही, सभाओं का योजना के साथ उचित सम्मिलन बड़ी संख्या में लोगों के आलिंगन के लिये किये प्रत्येक प्रयास के लिये महत्वपूर्ण हो जाता है - जो इसकी क्षमताओं तथा शक्तियों की पूर्णतया प्रकटन के लिए स्वयं ही एक आवश्यकता है।

23 अगले अनेक वर्षों में हम निश्चित ही स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के विकास के दर्शन करेंगे जो संभव हो रहा है राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं की बढ़ती शक्ति से, जिनकी कुशलता से सोचने तथा कार्य करने की क्षमताओं में दृष्टिगोचर बदलाव आया है, मुख्यतया जब उन्होंने स्थानीय स्तर पर समुदाय-निर्माण प्रक्रिया की विवेचना बढ़ती तीक्षणता तथा प्रभावशीलता के साथ करना सीख लिया है तथा आवश्यकता पड़ने पर सहायता, संसाधनों, प्रोत्साहन तथा प्रेममय मार्गदर्शन का इसमें समावेश किया है। उन देशों में जहाँ यह समय की मांग है, उन्होंने अपनी अनेक जिम्मेवारियों को क्षेत्रीय परिषदों को सौंप दिया है, कुछ प्रशासनिक कार्यों का विकेन्द्रीकरण किया है, अपने अधिकार क्षेत्र की संस्थागत क्षमताओं में वृद्धि की है तथा अधिक परिष्कृत वार्तालाप को पोषित किया है। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि राष्ट्रीय सभाओं की पूर्ण भागीदारी वर्तमान योजना के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये अवश्य अंतिम प्रहार तैयार करने में सहायक रही है। हम इस दिशा में और विकास देखने की आशा करते हैं जब वे सलाहकारों के साथ सामंजस्यता से अगले पाँच वर्षीय उद्यम में प्रयाण करने जा रहे अपने समुदायों को अगले महत्वपूर्ण द्रुतगामी महीनों में तैयार करने के प्रयास करेंगे।

24 निःसंदेह, पिछले दशक में सलाहकारों की संस्था का उदय बहाई प्रशासनिक व्यवस्था के सर्वाधिक महत्वपूर्ण विकासों में एक रहा है। इस संस्था ने अपने विकास में पहले ही असाधारण छलांग लगा ली थी, जब जनवरी 2001 में सलाहकार तथा सहायक मंडल सदस्य पवित्र भूमि में अंर्तराष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र की कार्मल पर्वत पर अपनी स्थायी सीट के उद्घाटन अवसर पर आयोजित सम्मेलन में सम्मिलित हुये। इसमें कोई संदेह नहीं कि उस घटना द्वारा निर्मुक्त की गई ऊर्जा ने संस्था को तीव्र गति से आगे बढाया है। सलाहकारों तथा उनके सहायकों ने जिस प्रकार का प्रभाव योजना के विकास में डाला है, यह दर्शाता है कि उन्होंने शिक्षण क्षेत्र के अग्रभाग में अपने नैसर्गिक स्थान को प्राप्त कर लिया है। हमें विश्वास है कि आने वाला वर्ष प्रशासनिक व्यवस्था की संस्थाओं को सहयोग में और बांधेगा, जैसे-जैसे सभी सीखने की उस विधा को जो समुदाय के क्रियाकलापों का स्पष्ट चिह्न बन चुकी है और प्रबलित करने का प्रयास करेंगे, विकसित होते अपने कार्यक्रमों तथा जिम्मेवारियों के साथ - उन क्षेत्रों में अत्यधिक आवश्यक रूप से जो सघन विकास कार्यक्रम से गुजर रहे हैं।

*****

25 बहाउल्लाह का प्रकटीकरण विशाल है। यह न सिर्फ व्यक्ति के स्तर पर बल्कि सामाजिक ढांचे में भी गहन बदलाव का आह्वान करता है। बहाउल्लाह स्वयं कहते हैं “मानवजाति के पूर्ण चरित्र में बदलाव लाना, ऐसा बदलाव जो स्वयं को प्रदर्शित करेगा, दोनों आंतरिक व वाह्य दशाओं में जो इसके आंतरिक जीवन व वाह्य परिस्थितियों दोनों पर प्रभाव डालेगा,

प्रत्येक प्रकटीकरण का उद्देश्य नहीं है ?” विश्व के प्रत्येक कोने में बढ़ रहा कार्य दर्शाता है वर्तमान बहाई क्रियाकलापों के नवीनतम स्तर को जो बहाउल्लाह की शिक्षाओं में निहित वैभवशील सभ्यता के केन्द्र के निर्माण से संबंधित है, जिसकी इमारत अनंत जटिलता तथा आयामों का उद्यम होगी जो मानवता की सदियों के प्रयास से निर्मित होगी। इसमें कोई सरल उपाय या फार्मूला नहीं है। जब प्रयास किया जाता है, बहाउल्लाह के प्रकटीकरण से प्राप्त अंर्तदृष्टि पर ध्यान देकर, मानवजाति द्वारा एकत्र ज्ञान को उपयोग में लाकर, मानवता के जीवन में बहाउल्लाह की शिक्षाओं को बुद्धिमत्ता पूर्ण लागू कर, उठ रहे प्रश्नों पर विचार कर आवश्यक सीख उत्पन्न होगी तथा क्षमतायें विकसित होंगी।

26 शिक्षण क्षेत्र में अपने अनुभवों को प्रणालीबद्ध करने में, कुछ निश्चित गतिविधियों को अधिक से अधिक लोगों के लिये मुक्त करने में, इसके प्रसार तथा सुगठन को बनाये रखने की सीख प्राप्त करने में क्षमता निर्माण की इस दीर्घकालीन प्रक्रिया में बहाई समुदाय को लगभग डेढ़ दशक का समय लगा है। समुदाय के जोशीले आलिंगन में तथा बहाउल्लाह के जीवनदायी संदेश से पोषण प्राप्त करने के लिये सभी का स्वागत है। आत्मा के लिये निश्चित ही सत्य की लालसा तथा धर्म के दुर्ग में शरण पाने तथा संविदा की एक कर देने वाली शक्ति से पोषण पाने के अतिरिक्त कुछ और आनंददायक नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का समूह चाहे वे बहाउल्लाह के अनुयायी हों अथवा नहीं, सामने आ रही चुनौतियों का सामना करने के लिये बहाउल्लाह की शिक्षाओं से जिस किसी भी बुद्धिमत्ता अथवा ज्ञान की मणियों की सहायता मिल सकती है उनसे लाभ उठाकर प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। मानवता को अपनी ओर बुलाती उस सभ्यता की प्राप्ति अकेले बहाई समुदाय के ही प्रयासों से नहीं हो पाएगी। अनेक समूह एवं संस्थाएँ विश्व बंधुत्व की उस भावना से ओत-प्रोत होकर, जो कि बहाउल्लाह के मानव एकता के सिद्धान्त का अप्रत्यक्ष प्रकटन है, मिल कर उस सभ्यता को उजागर करेगी जिसको वर्तमान समाज की उथल-पुथल एवं दुर्व्यवस्था से उभरना है। यह सबके समक्ष स्पष्ट हो जाना चाहिये कि निरंतर चलती वैश्विक योजनाओं के कारण बहाई समुदाय में ऐसी क्षमताएँ विकसित हुई हैं जिनके कारण यह सभ्यता के निर्माण के विविध एवं बहु आयामी कार्य में सहयोग दे कर उसके लिए ज्ञान की नई सीमाएँ खोलने में सक्षम हो गया है।

27 हमने रिजवान 2008 के अपने संदेश में इंगित किया था जैसे-जैसे मित्र क्लस्टर के स्तर पर श्रम करते रहेंगे, वे स्वयं को सामाजिक जीवन में और गहराई से उतरता पाएंगे और उनके समक्ष यह चुनौती आएगी कि वे सीखने की जिस प्रक्रिया में संलग्न हैं उसकी परिधि में बढ़ते मानव उद्यमों को सम्मिलित करें। हर क्लस्टर में जब सामुदायिक उपासना कार्यक्रम घर की आत्मीय पृष्ठभूमि में हुई विभिन्न चर्चाओं से अलंकृत होकर, ऐसी गतिविधियों के

साथ बुने जाते हैं जो समस्त जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य - वयस्क, युवा एवं बच्चों को आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करते हैं तब हर क्लस्टर में सामुदायिक जीवन की बहुत ही सजीव तस्वीर उभर कर आती है। स्वाभाविक रूप से सामाजिक बोध में प्रखरता आती है जब उदाहरण के लिए अभिभावकों में अपने बच्चों की आकांक्षाओं पर जीवन्त चर्चा होती है और किशोरों के प्रयासों के कारण सेवा कार्य आरंभ हो जाता है। जब एक बार समाज में मानव संसाधन पर्याप्त मात्रा में हो और विकास की रूप-रेखा स्थापित की जा चुकी हो तब समुदाय का सामाजिक क्षेत्र में कार्य अवश्य ही बढ़ना चाहिये। योजना के खुलने के इस अत्यन्त महत्वपूर्ण बिन्दु पर, जब बहुत सारे क्लस्टर इस स्तर के करीब पहुँच गए हैं; तो यह उचित है कि मित्र उस सहयोग की प्रकृति पर चिंतन करें जो उनके उन्नतशील, गुंजायमान समुदाय, समाज की भौतिक एवं आध्यात्मिक प्रगति के लिए करेंगे। इस संदर्भ में ऐसी सोच फलदायी होगी जो दो जुड़ी हुई एवं परस्पर सहयोगी गतिविधि क्षेत्रों को समाहित करती हो : सामाजिक कार्य में संलग्नता और समाज में प्रचलित व्याख्यानों में प्रतिभागिता।

28 पिछले अनेक दशकों में बहाई समुदाय ने इन दो प्रयास क्षेत्रों में बहुत अनुभव अर्जित किया है। अवश्य ही ऐसे अनेक बहाई हैं जो व्यक्तिगत रूप से सामाजिक कार्य एवं जनमानस व्याख्यान के कार्य में अपने व्यवसाय के कारण संलग्न हैं। अनेक गैर-संस्कारी संस्थाएँ प्रभुधर्म की शिक्षाओं से प्रेरित होकर क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपने लोगों के लिए सामाजिक एवं आर्थिक विकास के क्षेत्र में काम कर रही हैं। राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं की अनेक एजेंसियाँ विभिन्न माध्यमों से जनकल्याण हेतु अनेक विचारों का समर्थन कर रही हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी, संयुक्त राष्ट्र संघ का बहाई अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय कार्यालय भी कुछ इसी प्रकार का कार्य कर रहा है। जिस सीमा तक ऐच्छिक एवं आवश्यक हो, मित्र समुदाय के आधारभूत स्तर तक जाकर इस अनुभव एवं क्षमता का उस समय लाभ उठाएंगे जब वे अपने आस-पास के समाज की समस्याओं को हल करने का प्रयत्न करेंगे।

29 सामाजिक कार्य किसी व्यक्ति अथवा मित्रों के छोटे समूह द्वारा सीमित अवधि में किए गए अनौपचारिक प्रयत्नों से लेकर बहाई सिद्धान्तों से प्रेरित संस्थाओं द्वारा जटिल एवं परिष्कृत रूप से लागू की गई उच्च स्तरीय सामाजिक एवं आर्थिक योजनाओं - में से कुछ भी हो सकता है। अपने प्रभाव एवं क्षेत्र से परे सभी सामाजिक कार्य कितने भी क्षुद्र रूप में ही जनमानस के जीवन के सामाजिक अथवा आर्थिक पक्ष में प्रभुधर्म के सिद्धान्तों को लागू कर सुधार लाने का प्रयास करता है। इसलिए ऐसे प्रयत्न अपने कथित उद्देश्य - जो उस जनसमूह के न केवल भौतिक कल्याण को बल्कि उसके आध्यात्मिक कल्याण को बढ़ावा देने के कारण विशिष्ट है। मानवता के क्षितिज पर उभरती नयी विश्व सभ्यता को अवश्य ही भौतिक एवं आध्यात्मिक आवश्यकताओं के मध्य गत्यात्मक सामंजस्यता प्राप्त कर लेनी

चाहिए जो कि बहाई शिक्षाओं का मूल है। स्पष्ट रूप से इस आदर्श का बहाईयों द्वारा किए जा रहे सामाजिक कार्यों, चाहे उनकी पहुँच अथवा प्रभाव क्षेत्र कैसा भी हो, की प्रकृति पर गहरा प्रभाव होता है। यद्यपि देश-देश में, संभवतः हर क्लस्टर में परिस्थितियाँ भिन्न होंगी जिनके परिणामस्वरूप मित्र विभिन्न उद्यम करेंगे, कुछ ऐसी निश्चित आधारभूत अवधारणायें हैं जिनका सबको ध्यान रखना होगा। एक है - ज्ञान का सामाजिक अस्तित्व के केन्द्र में होना। अज्ञान को बढ़ावा देना। दमन का सबसे हानिकारक रूप है; यह पूर्वग्रहों की उन दीवारों को और मजबूत करता है जो मानवता की एकता - जो कि बहाउल्लाह के प्रकटीकरण का लक्ष्य एवं आधारभूत सिद्धान्त दोनों ही है - की प्राप्ति में अवरोध उत्पन्न करता है। ज्ञान तक पहुँच सभी मनुष्यों का अधिकार है - और ज्ञान का सृजन, उपयोग और प्रसार एक ऐसा दायित्व है जिसका एक समृद्ध विश्व सभ्यता के निर्माण के लिए सभी को अपनी क्षमताओं एवं कुशलताओं के आधार पर वहन करना है। न्याय सार्वभौमिक प्रतिभागिता की मांग करता है। इस प्रकार सामाजिक कार्य चाहे किसी वस्तु अथवा सेवा को उपलब्ध कराने का ही हो, परन्तु उसका मुख्य उद्देश्य किसी भी जनसमूह में उन क्षमताओं का विकास करना होगा जिससे वह एक बेहतर विश्व के निर्माण में भागीदारी कर सकें। सामाजिक परिवर्तन कोई प्रोजेक्ट नहीं है जो एक जनसमूह दूसरे जनसमूह के लाभ/भलाई के लिए करता है। सामाजिक कार्य का क्षेत्र एवं जटिलता किसी गाँव अथवा अड़ोस-पड़ोस में उपलब्ध मानव संसाधनों की उसे आगे बढ़ाने की क्षमता के अनुरूप ही होना चाहिये। इसलिए प्रयास साधारण स्तर पर आरंभ हो और जनसाधारण में बढ़ती क्षमता के अनुरूप उसका भी स्वाभाविक विकास हो। जैसे-जैसे सामाजिक परिवर्तन के समर्थक, बहाउल्लाह के प्रकटीकरण के तत्वों को विज्ञान एवं इसकी कार्यप्रणाली के साथ मिला कर सामाजिक वास्तविकताओं पर बढ़ती प्रभावकारिता से लागू कर पाते हैं, तो उनकी क्षमताएँ भी नए स्तर तक निश्चित ही पहुँच जाती हैं। सभी मानवों में अमूल्य रत्नों को देखते हुये, और सुगठन एवं विघटन की द्विआयामी प्रक्रिया का मस्तिष्क एवं हृदयों तथा सामाजिक ढाँचों पर होने वाले प्रभाव की पहचान करके, इस सामाजिक वास्तविकता को प्रभु की शिक्षाओं से मेल खाती दृष्टि से समझने का प्रयत्न करना चाहिये।

30 प्रभावकारी सामाजिक क्रियाकलाप सामाजिक संवादों में भागीदारी को समृद्ध करते हैं, वैसे ही जैसे कुछ संवादों से प्राप्त अंतर्दृष्टियाँ सामाजिक कार्यों को आकार देने वाली अवधारणाओं को स्पष्ट करती हैं। समुदायसमूह के स्तर पर, सार्वजनिक संवादों में सम्मिलित होने के अंतर्गत रोजाना की बातचीत में बहाई सिद्धान्तों को शामिल करने जैसे साधारण कार्यों से लेकर अधिक औपचारिक गतिविधियाँ तक हो सकती हैं। जिसमें से कुछ हैं - सभाओं में उपस्थित मुद्दों जैसे जलवायु परिवर्तन तथा पर्यावरण, प्रशासन तथा मानवाधिकार आदि

विषयों पर आलेख लेखन। इसमें यह भी सम्मिलित है कि नागरिक संगठनों तथा पड़ोस एवं गांवों में सार्थक वार्तालाप किया जाये।

31 इस संदर्भ में, हम एक चेतावनी देने की आवश्यकता अनुभव करते हैं। सभी के लिये यह मानना महत्वपूर्ण होगा कि सामाजिक क्रियाकलापों तथा सार्वजनिक संवादों में शामिल होने की महत्ता नामांकन प्राप्त करने की क्षमता से नहीं मापी जानी चाहिये। यद्यपि इन दो क्षेत्रों में किये गये प्रयास बहाई समुदाय के आकार में वृद्धि कर सकते हैं, लेकिन इनका उद्देश्य यह नहीं है। इस ओर ईमानदारी आवश्यक है। इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि बहाई अनुभवों को बढ़ा-चढ़ा कर न बताया जाये और हमारे आरंभिक प्रयासों जैसे किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रमों की ओर अनावश्यक ध्यान आकर्षित करने का प्रयास न किया जाये जिन्हें अपनी स्वाभाविक गति से परिपक्व होने के लिये छोड़ देना श्रेयस्कर होगा। इन सभी मामलों में विनम्रता हमारा सिद्धांत होगा। अपनी मान्यताओं के बारे में उत्साह से बताते समय मित्रों को दंभ प्रदर्शन से सावधान रहना होगा, जो उनके स्वयं के मध्य ही अधिक उचित नहीं है, दूसरी परिस्थितियों में तो और भी कम।

32 क्लस्टर के स्तर पर उत्पन्न इन नए अवसरों का वर्णन कर हम आपसे यह कदापि नहीं कहना चाह रहे हैं कि आप अपने वर्तमान रास्ते में किसी प्रकार का फेर-बदल करें। न ही आपको यह सोचना चाहिये कि यह नए अवसर सेवा के वैकल्पिक क्षेत्र हैं जिनकी समुदाय के सीमित संसाधनों एवं ऊर्जा के विस्तार एवं संगठन कार्य से कोई स्पर्धा है। आने वाले वर्ष में, संस्थान प्रक्रिया एवं उससे उत्पन्न गतिविधियों के जाल का सतत सशक्तिकरण होना चाहिए और शिक्षण सभी अनुयायियों के लिए सर्वोपरि होना चाहिये। सामाजिक जीवन में अधिक संलग्नता का प्रयास अपरिपक्व रूप में नहीं करना चाहिये। यह स्वाभाविक रूप से तब आगे बढ़ेगा जब प्रत्येक क्लस्टर में मित्र इस योजना में दी गई विधि को कार्य, समीक्षा, परामर्श एवं अध्ययन की प्रणाली द्वारा लागू कर इसके परिणामस्वरूप कुछ सीखेंगे। समुदाय में अपने विकास को बढ़ावा देने तथा अपनी ऊर्जा-शक्ति को बनाये रखने की क्षमता में वृद्धि के साथ-साथ सामाजिक जीवन में भागीदारिता विकसित होगी। यह समुदाय के विस्तार एवं सुगठन के लिए किए जा रहे प्रयत्नों के साथ इस सीमा तक सामंजस्य प्राप्त कर लेंगे कि वह वैश्विक योजनाओं की वर्तमान श्रृंखला की आधारभूत रूप-रेखा के तत्वों का उपयोग करने लगेंगे। सीखने के नए क्षेत्रों में जितनी रचनात्मकता से इन तत्वों का उपयोग किया जाएगा उसी अनुपात में यह जनसमुदाय को बहाउल्लाह द्वारा परिकल्पित एक समृद्ध एवं शान्त विश्व सभ्यता की ओर बढ़ाने में योगदान देंगे।

33 प्रिय मित्रों : कितनी बार प्रिय मास्टर ने यह आशा व्यक्त की कि अनुयायियों के हृदयों में एक दूसरे के प्रति इतना प्रेम उमड़ेगा कि वे अलगाव की किसी रेखा को नहीं मानेंगे और

सम्पूर्ण मानवता को एक परिवार के रूप में देखेंगे। अपने एक प्रबोधन में वे कहते हैं : "किसी को अजनबी के रूप में न देखो, बल्कि समस्त मनुष्यों को अपने मित्र के रूप में देखो, क्योंकि अगर तुम अपनी दृष्टि भिन्नताओं पर केन्द्रित करोगे तो प्रेम एवं एकता पाने में कठिनाई होगी।" पिछले पृष्ठों में परीक्षित सभी बदलाव गूढ़तम स्तर पर पवित्र चेतना की शक्ति द्वारा प्राप्त सार्वभौमिक प्रेम की एक अभिव्यक्ति ही तो है। क्योंकि क्या ईश्वर के प्रति प्रेम ही मनमुटाव एवं विभक्ति के सभी आवरणों को जला कर हृदयों को परिपूर्ण एकता में नहीं पिरो देता है ? क्या यह उसका प्रेम नहीं है जो आपको सेवा के पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है और सक्षम बनाता है कि आप सभी आत्माओं में उसे जानने और उसकी उपासना करने की क्षमता को पहचान सकें ? क्या यह जानकर कि प्रभु अवतार ने सहर्ष ही मानवता के प्रेम के लिए एक कष्टप्रद जीवन जीना स्वीकार कर लिया, आप प्रेरित नहीं हो जाते ? आप स्वयं, ईरान के अपने प्रिय बहाई भाईयों एवं बहिनों को देखिये। क्या वे ईश्वर के प्रति प्रेम एवं उसकी सेवा की उत्कट भावना से उत्पन्न धैर्य का उदाहरण नहीं प्रस्तुत करते हैं ? अत्यन्त क्रूर एवं दुखःद दमन से ऊपर उठने की उनकी क्षमता क्या इस दुनिया के लाखों दमित लोगों की उस क्षमता की ओर संकेत नहीं करती है जिसके द्वारा वे उठ खड़े होकर धरती पर प्रभु के साम्राज्य के निर्माण में निर्णायक प्रतिभागिता कर सकते हैं। विभाजनकारी सामाजिक संरचना से विचलित हुए बिना, आगे बढिए और हर शहरी पड़ोस एवं ग्रामीण इलाके में, विश्व के हर कोने में प्रतीक्षारत आत्माओं तक बहाउल्लाह का संदेश पहुँचाईये, उन्हें ईश्वर तथा महानतम नाम के इस समुदाय में आकर्षित करिये। आप हमारे विचारों एवं प्रार्थनाओं से कभी भी दूर नहीं होते और हम निरन्तर ईश्वर से याचना करते रहेंगे कि वह अपने अद्भुत अनुग्रह से आपको प्रबल करें।

विश्व न्याय मंदिर